Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

पर्यटन विकास में शिक्षा की भूमिका (धार जिले के बाघ गांव के संदर्भ में)

श्रीमती किरण मण्डलोई*, डॉ. प्रवीण मण्डलोई*

शोध सार (Abstract)

किसी भी देश राष्ट्र अथवा समाज या वर्ग का मूल्यांकन उसके धन, वैभव एवं सम्पदाओं से नहीं होता है । राष्ट्र या देश व समाज का मूल्यांकन तो उनके नागरिकों की योग्यताओं पर निर्भर करता है । शिक्षा ही एक ऐसा प्रमुख साधन है जो कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में एक अहम भूमिका जोड़कर राष्ट्रीय या सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है।

मध्यप्रदेश को भारत का हृदय प्रदेश कहा जाता है । यहां के दर्शनीय स्थल अपनी विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहां के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवेश ने प्रदेश को पर्यटन स्थल के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान दिलवाई है। पुरात्व एवं पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध इस प्रदेश में ऐसा कोई जिला नहीं होगा जहॉ दर्शनीय या पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान न हो परन्तु कई जिले ऐसे है, जहां के पर्यटन स्थलों से पर्यटक आज भी अनजान है । इन्हीं जिलों में धार जिला भी शामिल है जहां पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएँ है। पर्यटन धर्म, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय उद्योग है। पर्यटन मानव जाति की एकता और मात्र भाव की आधारशिला है। पर्यटन धार्मिक तीर्थ, मेले व त्यौहार, ऐतिहासिक स्मारक, प्राकृतिक स्थल, वन्य प्राणियों के संरक्षित क्षेत्र, बड़े–बड़े बांध, विशाल औद्योगिक संयत्र एवं आधुनिक नगर आदि भी पर्यटन के प्रमुख आकर्षक केन्द्र है।

धार जिला आदिवासी बाहुल्य पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण यहा की आदिवासी संस्कृति भी मध्यप्रदेश की धरोहर है। इन पिछडे क्षेत्रों में आवागमन कि सुविधा, एवं टूरिस्ट कॉटेज व अच्छे होटलों की सुविधा न होने के कारण पर्यटन का विकास नहीं हो पाया है। शिक्षा के माध्यम से पर्यटन के विकास में संभावनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है।

कुंजीशब्द: शिक्षा, विविधता, विशिष्ट, आदिवासी।

परिचय

बाघ मध्यप्रदेश के धार जिले की कुक्षी तहसील का एक छोटा सा गांव है, जो बाघनी नदी के किनारे विन्ध्याय पर्वत में हो कहा जाता है कि इस क्षेत्र में बाघों का निवास हुआ करता था और अक्सर बाघ इस नदी में पानी पीने आया करते थे इसलिए इस नदी का नाम बाघनी और गांव का नाम बाघ पड़ा।

*सहायक प्रधान अध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, बड़नगर।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

एक कहावत ऐसा माना जाता है कि मां बाघेश्वरी देवी बाघ पर सवार होकर पूरे क्षेत्र का भ्रमण करती थी। इसलिए भी इस नदी का नाम बाघनी व गांव का नाम बाघ पड़ा।

अध्ययन का क्षेत्र

यह क्षेत्र विन्ध्याचल व सतपुड़ा के मध्य में 22° 37 उत्तरी अक्षांश एवं 74° 77 पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 240 मीटर (787 फिट) है यह शुष्क एवं चूना प्रधान क्षेत्र है। यहाँ से नर्मदा नदी 30 किमी की दूरी पर स्थित है।

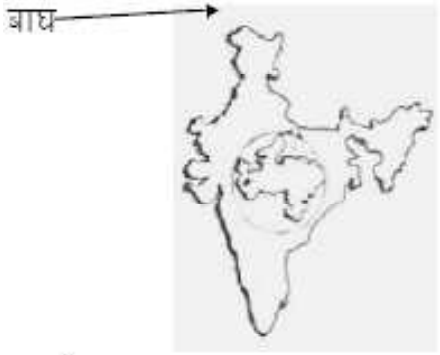

उद्देश्य

शिक्षा में पर्यटन स्थलों के महत्व को बढ़ावा देना तथा छुपे व पिछड़े पर्यटन स्थलों का देश–विदेश में प्रसार–प्रसार करना व शासन का ध्यान आकर्षित कर पर्यटन / पर्यटकों को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसरों को बढ़ाना।

प्रमुख पर्यटन स्थल

बाग गुफाएं

बाग गुफाएँ धार से 97 कि.मी. दूर विन्ध्यन पर्वत के दक्षिण में स्थित है। कुछ इतिहासकार इन्हे चौंथी और पांचवी सदी में निर्मित मानते हैं लेकिन अधिकतर सातवी सदी मे। प्रारम्भ मे इन गुफाओ की सख्या 9 थी। जिसमें से अब पांच ही शेष है। इन गुफाओं का संबंध बौद्ध मत से है। यह गुफाएँ अजंता और एलोरा की गुफाओं के समान ही कलापूर्ण भित्ति चित्रों से युक्त है। इन गुफाओं की खोज 1818 में की गई थी। माना जाता है कि दसवीं शताब्दी मे बौद्ध धर्म के पतन के बाद इन गुफाओं को मनुश्य भूल गया था और यहां बाघ निवास करते थे। इसीलिए इन्हें बाघ गुफाओं के नाम से जाना जाता है। गुफाओं में मौजूद पांडवों का सभागृह होने के कारण इन्हे पांच पाण्डव भी कहा जाता है। इन गुफाओं की एक विशेषता यह भी है कि आप इसके अंदर जायेगे तो 'एयरकंडीशन कक्ष' के समान अहसास होगा।

वर्ष 1953 में भारत सरकार द्वारा बाग गुफाओं को 'राष्ट्रीय स्मारक' घोषित किया गया। इसके संरक्षर का जिम्मा पुरातत्व विभाग को सौंपा गया किन्तु आज भी यहा पर्यटकों की संख्या बहुत कम है।

बाघ प्रिंट

बाग में 1962 में एक मुस्लिम खत्री परिवार यहां का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर यहां बस गया था। इस परिवार ने अपने भरण–पौषण के लिए एक छोटा सा व्यवसाय रंगाई–छपाई का कार्य शुरू किया। जिसमें इन्होंने प्राकृतिक रंगों व प्राकृतिक तरिके को अपनाया। विन्ध्य पर्वत होने के कारण यहां पर कई प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। बाग प्रिंट में केमिकल रंगों के बजाय फिटकरी, शहतूत और रीठे व धावड़ा से तैयार प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। और आज भी किया जा रहा है। इन रंगों को बड़ी–बड़ी भट्टियों में पकाकर रंग तैयार करके सांचे द्वारा काटन व सिल्क कपड़ों पर उतार दिया जाता है। कपड़ों को सुखाकर

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

बाघनी नदी मे धोकर फिर से सुखाकर कपड़े को तैयार किया जाता है। यहा से छपे हुए काटन के चादर व सिल्क की साड़िया देश–विदेश में विख्यात है। इनको कई राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके है।

आदिवासी संस्कृति

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण यहां की संस्कृति मध्यप्रदेश की धरोहर है। यहां की संस्कृति पश्चिती मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करती है। यह भारत व देश विदेश में विख्यात होती जा रही है । यहां के रीति–रिवाज व त्यौहार जैसे भगोरिया देश विदेश के लोग देखने आते है।

भारतीय संस्कृति की धर्म, सगीत, शिल्प एवं अन्य कलाओं का प्राचीनतम रूपों में यहां देखा जा सकता है। इनमें शताब्दियों से यद्यपि कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है फिर भी एक अजोब ताजगी है जो पयटकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां के लोगों को रोजगार न मिलने के कारण पलायन कर रहे है और आदिवासी सस्कृति भी धीरे–धीरे कम होती जा रही है। अत: इन्हें स्थानीय स्तर पर रोजगार देकर संस्कृति को बचाना चाहिए।

डायनासोर संग्राहलय

बाग में एक राष्ट्रीय डायनासोर जोवास्म संग्राहलय स्थापित किया जा रहा है। जिसमें डायनासोर के अंड़े तथा उसके अवशेषों को संग्रहीत किया जायेगा।

निष्कर्ष

यहां पर हिन्दू व मुस्लिम की एकता एक मिशाल है क्योंकि बागप्रिंट में ज्यादातर काम करने वाले मजदूर आदिवासी वर्ग के है और यह दोनों सम्प्रदाय कई वर्षो से एक साथ मिलकर आज भी कार्य कर रहे है। इन छुपे हुए क्षेत्रों में पर्यटन स्थलों की जानकारी को उजागरकर पर्यटकों तक पहुँचाने से इन स्थानों का महत्व और अधिक बढ जायेगा। इन पर्यटन स्थलों के माध्यम से लोगो को अधिक रोजगार प्राप्त होगा। पर्यटन स्थलोंको जीवित रखने के लिए इनका संरक्षण एवं विकास करना बहुत आवश्यक है।

सुझाव

पर्यटन के विकास के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

1. आवागमन के साधनों को सुगम बनाया जाय।
2. पर्यटको के लिए न्यूनतम शुल्क पर टूरिस्ट कॉटेज बनाये जाय।
3. धार्मिक स्थलों पर पुख्ता सुरक्षा इतजाम हो।
4. पर्यटन स्थलों पर सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजन किये जाय ।
5. पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाय।
6. पर्यटनों को शासन द्वारा प्रचार–प्रसार किया जाय।
7. शिक्षा को बढ़ावा देकर यहां की जनता को इन्हीं पर्यटन व पर्यटनों के माध्यम से रोजगार।
8. शिक्षा के क्षेत्र में स्थानिय पर्यटनों को बढ़ावा देना।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. डॉ. हरिमोहन–संस्कृति पर्यावरण और पर्यटन–तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।
[2]. डॉ. जगमोहन नेगी–राष्ट्रीय संस्कृति संपदा– सांस्कृतिक पर्यटन एवं पर्यावरण– तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
[3]. India.gov.In Dhar District.
[4]. http://hi.wikipedia.org.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.